रिकॉर्डः– इनसाफ की डगर पर..... शिवभगवानुवाच। अब बच्चे जानते हैं कि मनुष्य अपन को शिव वा भगवान नहीं कह सकते हैं। भगवान ही बच्चों को पहले–2 कहते हैं कि मनमनाभव। जैसे कि बाप बैठ बच्चों को आत्मा का भी ज्ञान देते हैं। मनुष्यों को तो न आत्मा का, न प० का ज्ञान है; इसलिए अपन को ही प० कह देते हैं वा कहते प० में मिल एक हो जाएँगे; परन्तु अपन जानते हैं कि आत्मा तो इमॉर्टल है और ये ड्रामा भी अविनाशी है। ये बाप बैठ आत्माओं को समझाते हैं। परमपिता प० शिव कहते हैं, मैं निराकारी बाप तुम निराकारी बच्चों को बैठ पढ़ाता हूँ। जैसे मैं निराकार इस शरीर का लोन लेता हूँ, वैसे तुमने भी धारण किया है। तुम्हारा ये शरीर विख से पैदा हुआ है। जिस तन में प्रवेश करता हूँ वो भी विख से पैदा हुआ है। विख को सीमेंट अथवा वीर्य भी कहते हैं। जो भी इस समय मनुष्य मात्र हैं वे सभी विख की पैदाइश है। मैं इस तन में आए तुम आत्माओं को समझाता हूँ। आत्मा कोई विख की पैदाइश नहीं। यह शरीर ही विख या अमृत की पैदाइश होती है। आत्मा तो प० की अविनाशी संतान है। आज बाबा आत्मा और प० पर समझाते हैं। वास्तव में कर्म भी आत्मा करती और भोगती है शरीर द्वारा। मनुष्य तो देह–अभिमानी हैं। इस समय तुमको देही–अभिमानी बनाता हूँ। ऐसे समझो कि हम आत्माएँ भी इन ऑरगन्स से सुन रही हैं। मैं भी आत्मा हूँ। परे ते परे रहने वाला हूँ; इसलिए परमआत्मा कहा जाता है। तुम आत्माएँ तो सदैव परे ते परे रहने वाली नहीं हो। तुम तो सतयुग से कलियुग अंत तक जन्म–मरण में आती हो। ये आत्मा को समझाते हैं। आत्मा को ही धारण करना है; इसलिए कहते हैं, आत्मा अभिमानी भव, देही–अभिमानी भव। ऐसा और कोई स्कूल में टीचर नहीं समझावेगा। यहाँ आत्माओं का बाप आत्माओं को समझाते हैं, जो आत्मा इस जीव द्वारा सुन रही है। मैं परमआत्मा भी जीव द्वारा बोल रहा हूँ; परन्तु ये जीव कोई मेरा नहीं है, यह लोन लिया है तुम बच्चों को समझाने लिए। अब तुम बच्चों को मेरे पास वापस आना है। मैं ज्ञान का सागर हूँ। ऐसे नहीं कि मैं शंकर के मस्तक से गंगा लाता हूँ। शंकर के जटाओं से तो गंगा निकली नहीं है। गंगा के लिए भी कितनी बातें हैं। अच्छा, शंकर ने गंगा लाई वा भागीरथ ने लाई? शंकर की जटाएँ फैली हुई दिखाते हैं। चित्र भी अनेक प्रकार के हैं; जैसे जगदम्बा। वो तो एक ही सरस्वती है। इनको बैंजो दिया हुआ है और अनेक भुजाएँ दे दी हैं। ज्ञान–कटारी, खड़ग आदि नाम सुना है तो अनेक भुजाएँ दे उनमें खड़ग, कटार आदि दे दिया है। जगतअम्बा का चित्र काला नहीं बनाते। फिर काली को काला बनाते हैं तो उनको भी माता कहते हैं। ऐसी काली तो है नहीं। एक ही जगतअम्बा है। उनपर बलि तो चढ़ते नहीं। बलि तो शिव पर चढ़ते हैं। चित्र तो अथाह भिन्न–2 प्रकार के बनाए हैं। देवियाँ भी अनेक हैं, जिन पर बलि चढ़ते हैं। भक्तिमार्ग का प्रस्ताव बहुत हैं। इसको तो चलना ही है। अब बाप समझाते हैं, यह शिव का चित्र बड़ा अच्छा है। कहाँ भी तुम ले जाकर समझाए सकती हो। बंगाल में देवियों के बहुत मंदिर हैं। घर–2 में देवियाँ होती हैं। अब बच्चियाँ कहाँ जाए, कोई सुने, न सुने। इसमें भी हिम्मत चाहिए। जाकर समझावें कि हम आपका उपकार करने आए हैं। भक्ति तो दुर्गति में ले जाती है। ज्ञान, सद्गति में ले जाता है। इन चित्रों से बहुत सर्विस करनी है। सेन्सीबुल बने हो तो ये चित्र ले मंदिरों में जाकर सर्विस कर सकती हैं। बनारस में भी बहुत शिव के मंदिर हैं। कहते हैं, यहाँ भक्ति का बहुत प्रचार है। अरे, भक्त ही तो चाहते हैं। भक्तों लिए तो और अच्छा है। शिव का चित्र ले जाकर समझाय सकती हैं। ये शिव है। इन पर जीते जी बलि चढ़ना है। बच्चा बन

इनसे वर्सा लेना है। काली वा अम्बा पर बलि नहीं चढ़ना है। उनसे वर्सा नहीं मिलेगा। तुम भी शिव पर बलिहार जाते हो। इस सर्विस करने में बुद्धि बड़ी अच्छी, क्लीयर चाहिए। नष्टोमोहा हो। बाप तो बच्चों को समझाए, योग से पवित्र बनाए, परमधाम की यात्रा पर ले जाते हैं, जहाँ से फिर इस मृत्युलोक में नहीं आना है, फिर आना है अमरलोक में। हम इस समय पढ़ते हैं, उसकी प्रालब्ध फिर दूसरे जन्म से 21 जन्मों लिए आरम्भ होगी। वो पढाई तो है एक जन्म लिए। दूसरा जन्म लिया तो फिर पढ़ना पड़े। हाँ, कोई अच्छा पढ़ते हैं तो संस्कार ले जाते हैं, फिर जाकर वो पढ़ाई पढ़ते हैं; परन्तु नाम–रूप, देश–काल सब बदल जाता है। हम अमरलोक जाते हैं। हमारा वहाँ माता–पिता कौन होंगे, वह भी अभी पता पड़ सकता है; परन्तु वहाँ तो कुछ पता नहीं पड़ेगा। समझो, कोई को पता पड़ता है, करते(करके) उस समय खुशी होगी, कहेंगे– तुम आठ नम्बर में आवेंगे; परन्तु पुरुषार्थ से ही बनेगा ना। तो बाप बच्चों को परमधाम की यात्रा पर ले जाते हैं। फिर इस मृत्युलोक में आना नहीं है। यह नॉलेज बच्चों की बुद्धि में है। वो ही डिटेल समझाए सकते हैं। नटशेल में तो बहुत सहज है। शिवबाबा और वर्से को याद करो। बाकी तो सभी चित्र वाह्यात हैं। राइटियस चित्र एक है शिवबाबा का। लिंग ब(रोबर) है। ज्योति स्वरूप है। उनके फीचर्स तो कोई हैं नहीं। बाकी कृष्ण के एक्युरेट फीचर्स तो मिल नहीं सकते। ब्र०वि०शं० के भी एक्युरेट फीचर्स नहीं मिल सकते। सूक्ष्मवतन से चित्र कैसे आवे! बाकी शिवबाबा का तो बहुत इज़ी है। सिर्फ लिंग है, आँख–नाक तो हैं नहीं। तो तुम इस शिव के चित्र से बहुत अच्छा समझाए सकते हो। इसमें लिखत भी अच्छी है। बाप कहते हैं, इस समय तुम बच्चों को देही–अभिमानी बनना है और बाबा के डायरैक्शन पर चलना है। डायरैक्शन यही है– हे बच्चे! मुझे याद करो। सजनियों को कहते, मुझ साजन को याद करो। जीव आत्मा याद करती है। जीव आत्मा है तब ब्राइड्स कहा जाता है। वो है सभी का ब्राइड ग्रुम। जब आत्मा है तो सभी बच्चे हैं, बाप को याद करते हैं। जीव आत्मा है तो सभी भक्तियाँ अथवा सीताएँ हैं, भगवान राम को याद करती हैं; तब साजन आता है सजनियों की ज्योत जगाने, सजनियों के सिर पर अमृत का घड़ा रखने आता है अथवा आत्मा की ज्योत जो बुझाणी हुई है, उसमें घृत डालते हैं। जब कोई मरता है तब भी दीवा जलाते हैं, फिर उसमें घृत डालते रहते हैं तो प्राणी को अंधियारा न हो। वास्तव में आत्मा को अंधियारे की बात नहीं। अंधियारा तब है जब शरीर है। बाकी सूक्ष्मवतन वालों को अंधियारा हो नहीं सकता। न घोस्ट को अंधियारा होता है, न आत्मा को स्थूल अंधियारा होता है। ये दीवा जलाना वा ब्राह्मणों को खिलाना एक रसम पड़ गई है। यहाँ तो प्रैक्टिकल साक्षात्कार कर उसको खिलाते हैं, वो आते भी हैं। ये सब हैं साक्षात्कार। जैसे स्वप्न आता है, चोर आया है, यह भी जैसे स्वप्न है; परन्तु ये है शुभ स्वप्न। इनको साक्षात्कार कहा जाता है। वो तो है अशुभ स्वप्न। हम भोग लगाते हैं, यह भी ड्रामा में है। जो सेकण्ड चलता है, सब ड्रामा में नुँधा है। फिर भी बाप कहते हैं, मुझे याद करो। मैं आया हूँ तुमको परमधाम की यात्रा कराने। परमपिता प० के सिवाय और तो कोई ले जा नहीं सकता। तो तुमको आत्मा का नशा रहना चाहिए। इसको कहा जाता है, देही–अभिमानी का नशा। अब ड्रामा पूरा हुआ। अब बाप गाइड बनकर आया है सभी को भट्ठी में डाल प्युअर बनाने। सभी को वापस ले जावेंगे। वो है ही पतित–पावन। पतित दुनिया को पावन बनाते हैं। पहले–2 है आत्मा पतित,

फिर उनके साथ शरीर भी पतित, तत्व भी पतित बनते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है। तो अब सारी दुनिया खाक होनी है। होली में कोकी पकाते हैं ना। धागा नहीं जलता है। तो शरीर जल जाता है, बाकी आत्मा नहीं जलती। सभी शरीर, मकान आदि खलास हो जावेंगे। आत्माएँ वापस चली जावेंगी। अब बाप कहते हैं तुमको, याद करो तो इस दुख रूपी दुनिया से छूट जावेंगे। विकर्म विनाश करने लिए योग में रहना है। एक तरफ विकर्म विनाश के लिए योग लगावे और फिर विकर्म भी करे, तो फिर सौगुणा दंड हो जावेगा। देह में मोह न रखना है। यह सब काँटे हैं। इनको याद करने से काँटे लगते हैं। बाबा को याद करने से फूल बनते हैं। ममत्व मिटाना है। कई बच्चे लिखते हैं– बाबा, संकल्प बहुत आते हैं। काम–क्रोध का हल्का नशा आता है; परन्तु कर्म–इन्द्रियों से न करना है। माया का काम ही है नशे में लाना। इसको मंसा कहा जाता; परन्तु विकर्म कर दिया तो सौगुणा दंड भोगना पड़ेगा। इसलिए अपन को हमेशा अशरीरी, ब्रह्माण्ड का मालिक समझो। अमरनाथ पर जाते हैं, कोई पूछेगा– कहाँ जाते हो, तो कहेंगे– अमरनाथ। बुद्धि में बैठ जाता है– अमरनाथ, बद्रीनाथ अथवा गया में जाता हूँ। पण्डा साथ में है। मुख से कोई गया–2 वा अमरनाथ–2 कहेंगे नहीं। तो हम आत्माओं को भी जाना है परमधाम। जो हमारा घर है वहाँ जाना है। घर से आते हैं पार्ट बजाने। जैसे वो एक्टर्स भी घर से आते हैं, ड्रेस आदि वहाँ पहन फिर पार्ट बजाते हैं। यहाँ तो सब बातें बुद्धि में बैठाई जाती हैं– कैसे हम ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बनते हैं। यह चक्र है। भल वो विराट रूप का चित्र बनाते हैं; परन्तु समझते हैं कुछ नहीं। बाबा ने समझाया है, वर्ण भी 5 हैं। अगर 4 वर्ण कहें तो फिर ब्राह्मण वर्ण कहाँ गया? भल ब्राह्मण हैं; परन्तु वो सिर्फ जात चली आती है। तुम सच्चे ब्राह्मणों का ही भारत में मुख्य पार्ट है। ब्राह्मणों का है संगमयुग। इस समय तुम भारत की सेवा कर रहे हो। ब्रह्मा की मुखवंशावली ब्राह्मण–ब्राह्मणियाँ हम तन–मन–धन से भारत को नर्क से स्वर्ग बनाते हैं। असल में शूद्र थे, फिर शूद्र से ब्राह्मण मुखवंशावली बने। फिर ब्राह्मण से देवता बनते हैं। हम हैं भारत के रूहानी सोशल वर्कर्स। हमारे पास जेवर आदि कुछ भी नहीं हैं। हम एक को ही याद करते हैं। हम अविनाशी ज्ञान धन इकट्ठा कर रहे हैं, फिर विनाशी धन क्या करेंगे! हम घरबार नहीं छोड़ते; परन्तु पुरानी दुनिया को छोड़ना है। हम भारत की बहुत अच्छी रूहानी सेवा करते हैं, रूह को पवित्र बनाते हैं। रूह ही नॉलेज धारण करते हैं ना। तुम झट बतला सकते हैं, हम 84 जन्म कैसे लेते हैं। यह नॉलेज प०पि०प० से मिल रही है मानुष से देवता बनने लिए। यह है मुखवंशावली ब्राह्मण। इस शिव के चित्र में बहुत अच्छा लिखा हुआ है। यह भी लिख देना चाहिए। 100% प्योरिटी, पीस, प्रॉसपेरिटी इज़ यूअर वर्थ राइट। चित्र पर कहाँ भी जाकर समझाना चाहिए। जगतअम्बा एक है तो एक ही रूप, एक ही चित्र होना चाहिए। ब्रह्मा है जगतपिता और जगतअम्बा हुई जगत की माता। ब्रह्मा की मुखवंशावली किसने बनाया? प०पि०प० शिव ने। कलश किस पर धारण करावेंगे? ज़रूर माता चाहिए ना। मुखवंशावली बनाने के लिए यह ब्रह्मा और कलश धारण करने लिए हैं माता जगदम्बा। यह है डिटेल समझानी। जैसे बाबा में बीज और झाड़ का ज्ञान है वैसे हम भी अंत में मास्टर बीजरूप बन जाते हैं। यह हुआ स्टूडेंट को ज्ञान का स्मरण करना। यह सारी डिटेल अपन पास ही रहनी चाहिए। समझाने में हिम्मत भी चाहिए। सन्यासियों से डरना न है। हम जानते हैं, सन्यासियों में, बौद्धियों में, मुसलमानों में भी कोई–2 हमारे ब्राह्मण हैं। कोई न कोई निकल आवेगा। माताओं को तो बिल्कुल डरना न चाहिए। शक्तियों की शेर पर सवारी दिखाते हैं ना। महारथी पांडव हाथी पर दिखाते

हैं। तुम माताओं को कहाँ भी जाने में हर्जा नहीं है। तुम्हारा तो दिखाया हुआ है, तुम सन्यासियों को जीतती हो। निडर हो सर्विस करनी चाहिए। कोई पास भी जाकर चित्र दे उनको समझाओ तो बहुत खुश होंगे। सर्विस तो बहुत है; परन्तु सर्विस करने का ढंग नहीं आता। बच्चों को सर्विस तो बहुत करनी है; और सर्विस सब जगह है। समझते हैं, तीर्थों पर सर्विस नहीं हो सकती; परन्तु हिम्मत चाहिए। बाबा के पास कितने बच्चे हैं, कितना ओना रहना है। फिर भी कहते हैं, न बिसरो, न याद रहो। कितने बच्चों का बाबा को खयालात रहता है तो भी रात को फिर बाबा को याद करते, विचार–सागर–मंथन करते रहते हैं। कितने बच्चे हैं! जिस्मानी बच्चों से भी रूहानी में प्यार जास्ती हो गया है। कितने बच्चों को पत्र लिखने पड़ते, फिर भी बाबा की याद रहती है, वहाँ जाना है। लौकिक कोई भी संबंध में ममत्व न जाना चाहिए। वो मार डालता है। न लोभ चाहिए। कोई–2 का किसी चीज़ में इतना मोह रहता है जो बात मत पूछो। शिवबाबा का यज्ञ है ना। उसका ट्रस्टी हो रहना है। सब कुछ शिवबाबा का है। यज्ञ की पाई–2 मुहर बराबर है। देहभान छोड़ना है। जो चाहिए सो ले सकते हैं। फिर भी माया है ना। बहुतों में हवस रहती है। यहाँ ईश्वरीय खजाने से कोई चोरी करे, यह तो महान पाप है। उन मंदिरों से चोरी हो जाती है। यह तो भगवान का यज्ञ है। यहाँ कभी भी कोई उल्टी बात न होनी चाहिए। बहुत परहेज़ें हैं। अच्छा, आज नलनी और रजनी बम्बई जा रहे हैं। टेप में याद भी भर लेते हैं। बाप सपूत बच्चों को ही याद करते हैं। बाप को जिस बच्चे ने सुख दिया होगा, अंत में उनको ही याद करेगा ना। अभी तो सुख देने वाला एक ही बाप है। अंतकाल भी कहते हैं ना, राम–2 कहो; क्योंकि वो सबको सुख देने वाला है। उस बाप को भी सुख देने वाले बच्चे हैं ना। तो बाप बच्चों को याद करते हैं। आए ही हैं बच्चों को ज्ञान श्रृंगार कर ले जाने लिए। तो सर्विसएबुल बच्चों में ज़रूर मोह रहेगा। उनको याद करते हैं। बाबा जानते हैं, बम्बई में कौन–2 सर्विस करते हैं। मम्मा तो याद ही रहती है। फिर मम्मा को किसने निमंत्रण दिया? रमेश ने। रमेश को किसने अपनाया? शांता ने। वो बहुत अच्छी है। बड़ी अनन्य बच्ची है। उनकी कृपा से कितने निमित्त बने हैं। शांता तो तख्तनशीन बनी है। और भी पुरुषार्थ करे तो नम्बरवार वहाँ तख्त ले सकते हैं। तो मददगारों को याद किया जाता है। जो निमंत्रण देने निमित्त बनते हैं तो उनको भी फिर बहुतों की आशीर्वाद मिल जाती है। अब बाबा बम्बई वालों को लिखते रहते हैं, आऊँगा तो याद रहेगी, बापदादा आवेंगे। बाबा को सर्विस का शौक तो रहता है। जाकर सबको प्रफुल्लित करेंगे। कभी भी जा सकते हैं, न भी जावे। दिल तो होती है जाकर वर्षा बरसावे। बच्चों से जास्ती बाप को ख्याल रहता है। बच्चों को रिफ्रेश करना है। बाकी सर्विस बहुत है। यह चित्र बहुत अच्छा बना हुआ है, सब देख खुश होंगे। हम कोई साकार मनुष्य की महिमा नहीं करते। मनुष्य, मनुष्य की सद्गति न कर सकते। गीता भगवान की गाई हुई है, न कि कृष्ण की। बहुत अच्छी रीति समझा सकते हैं। अच्छा, ॐ